23-24 अप्रैल 10 को
अखड़ा द्वितीय महासम्मेलन में
राँची चलें - राँची चलें

राष्ट्रीय-बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लूट
राजकीय दमन, अमानवीय विस्थापन,
अन्यायपूर्ण असमान राष्ट्रीय विकास
और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के खिलाफ

जल, जंगल, जमीन पर मालिकाना हक के लिए
पुरखा अधिकार और स्वशासन के लिए
हासा और भासा के स्वाभिमान के लिए
झारखंडी अस्तित्व और पहचान के लिए

भाषा कर रही है दावा

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

द्वितीय महासम्मेलन
23-24 अप्रैल 2010
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मोरहाबादी, राँची (झारखण्ड)

प्रिय संगी साथियो
जोहार!

गुलामी से आज तक झारखंडी जनता जल, जंगल, जमीन पर अपने पुरखा अधिकारों के बहाली की लड़ाई लड़ रही है। आजादी के बाद झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, अंडमान, असोम और भारत के अन्य राज्यों में रह रहे झारखंडियों को लगा था कि गुलामी के दिन खत्म हो गये और हमें भी हमारे अधिकार स्वतंत्र भारत में दे दिये जायेंगे। संविधान में इसके लिए कुछ प्रावधान भी रखे गए, लेकिन आजादी के बाद राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। भारत की केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने अंग्रेजों से भी क्रूरतम तरीकों से हमारे प्राकृतिक संसाधनों और आजीविका के स्रोतों पर हमला बोल दिया। छल-बल, सत्ता, पुलिस-सेना और अपराधियों के आतंक के बल पर हमें अपने पुरखा गाँवों-बसाहटों से खदेड़ दिया। करोड़ों मूलवासी-आदिवासी समुदायों को बेदखल और विस्थापित कर दिया। बहन-बेटियों को बेइज्जत किया और लाखों लोगों को मार डाला। विकास एवं मुख्यधारा में शामिल करने तथा संस्कृतीकरण के नाम पर हमारी भाषा-संस्कृति छीन ली गई। हूल और उलगुलान की ऐतिहासिक संघर्ष चेतना को दबाने के लिए झूठा इतिहास पढ़ाया जाने लगा। पुरखा अधिकारों की बहाली, आत्मनिर्णय के अधिकार और स्वशासन की आकांक्षा को मिटा डालने के लिए मातृभाषाओं को शिक्षा एवं पढ़ाई के दायरे से बाहर कर दिया।

इतना ही नहीं, अब तो ग्लोबल आर्थिक व्यवस्था के दौर में देशी-विदेशी, राष्ट्रीय-बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लूट की खुली छूट है। इससे कलिंगा, तोरपा, लालगढ़, नंदीग्राम-सिंगुर, पोटका, काठीकुंड आदि जगहों पर आदिवासियों-मूलवासियों का बड़े पैमाने पर नरसंहार किया गया। मुण्डा, खड़िया, हो, कुड़ुख, संताली सहित बिरहोरी, असुरी, मालतो जैसी आदिम एवं खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया, कुरमाली जैसी क्षेत्रीय भाषाएं रोजाना लहुलुहान हो रही हैं। जल, जंगल, जमीन और पुरखा अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे आदिवासियों एवं मूलवासियों के शांतिपूर्ण जनांदोलनों को 'नक्सली' बता कर कुचला जा रहा है। आज समूची दुनिया धरती-प्रकृति-इंसान को बचाने के लिए जहाँ 'सेव ग्रीन' की अपील कर रही है, वहीं हमारी सरकार 'ग्रीन हंट' अभियान चला रही है।

साथियो, पुरखा झारखंड के सभी राज्यों - झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा - में आज हमारी सांस्कृतिक अस्मिता खतरे में है। आदिवासी-मूलवासी एकता को धर्म के नाम पर तोड़ा जा रहा है। झारखंडी भाषाओं को द्वितीय राजभाषा का दर्जा देने और प्राथमिक स्तर से मातृभाषाओं में पढ़ाई शुरू करने की मांग अभी तक अनसुनी है। देशज-आदिवासी भाषा-साहित्य अकादमी एवं कला-संस्कृति अकादमी/संस्थानों की स्थापना नहीं हो पायी है, जिससे आम जनता और संस्कृतिकर्मी दम तोड़ रहे हैं।

झारखंडी भाषा और संस्कृति के इन्हीं सवालों पर 23-24 अप्रैल 2010 को रांची में झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा का दो दिवसीय द्वितीय महासम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। अतः आप सभी से आग्रह है कि महासम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल हों और एकजुट होकर पूरी ताकत से बहरी सरकार को आवाज दें - भाषा कर रही है दावा!

हासा (माटी) और भासा बचाने के संघर्ष में, महासम्मेलन में जरूर शामिल हों!

निवेदक: **संयोजक, द्वितीय महासम्मेलन तैयारी समिति**

नेपाल: **रामसुंदर दास** असोम: **जीतेन लकड़ा 9854620400** उड़ीसा: **विष्णु सिंह मुंडा 9178154886** प.बंगाल: **अनंत केसरिआर 9732132278 क्लारा मिंज 9932964805** अंडमान: **सिलवेस्टर भेंगरा 9932964805** गुमला: **चैत टोप्पो 9608554772** नेतरहाट: **सुषमा असुर 9798113955** बोकारो: **आकाशखूँटी 9234222426** धनबाद: **श्याम सुंदर महतो 9470367406** दुमका: **सुशील टुडू 9431945508** पूर्वी सिंहभूम: **कालीदास मुर्मू 9204386402** पश्चिमी सिंहभूम: **घनश्याम गागराई 9234637772** पंचपरगना: **डॉ. करमचंद्र अहीर 9798380280** राँची: **डॉ. वृंदावन महतो 94303459771** और **वंदना टेटे 9234678580**